तुम्बा - अनोखा मरुस्थलीय पौधा

बिमल श्रीवास्तव

लगभग दो वर्ष पूर्व मुझे बाड़मेर (राजस्थान) के अंदरूनी क्षेत्रों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। उस रेगिस्तानी इलाके में बड़े वृक्षों की संख्या नगण्य-सी थी। बस, जहां-तहां केवल कीकर/बबूल के पौधे तथा भूमि पर उगी हुई अनेक कंटीली झाड़ियां नज़र आती थी। कुछ कंटीली बेलें भूमि पर फैली हुई थीं। और वे भी ऐसी कि भूमि पर पैदल चलना मुश्किल हो रहा था। उनके बारीक नुकीले कांटे पतलून में गहराई से जा घुसे हुए थे और कपड़ों में फंसकर निरंतर चुभे जा रहे थे। (मुझे याद आ रहा है कि वापस आने पर कपड़ों से कांटों को साफ करने में लगभग 15-20 मिनट लग गए थे)।

फिर अचानक मुझे वहां एक आश्चर्य जनक दृश्य दिखा। आगे कुछ ऐसा नज़र आने लगा कि जैसे भूमि पर दर्जनों या सैकड़ों नारंगियां बिखरी पड़ी हों। और आगे बढ़ने पर संदेह होने लगा कि कहीं वे गहरे पीले या नारंगी रंग की टेनिस की गेंदें तो नहीं है। जब पास गए तो मालूम पड़ा कि सम्पूर्ण क्षेत्र में कंटीली बेलें फैली थी और उन बेलों में आकर्षक पीले रंग के फल से लगे थे जिनका आकार किसी टेनिस की गेंद के जैसा था। वैसे विरोधाभास यह था कि जहां वास्तविक नारंगी का स्वाद थोड़ा खट्टापन लिए हुए स्वादिष्ट मीठा होता है, वहीं उस आभासी रेगिस्तानी नारंगी का स्वाद अत्यधिक कड़वा था।

उस अनोखे फल के प्रति मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ चुकी थी। उस क्षेत्र के जानकार लोगों ने बताया कि उस पौधे को स्थानीय भाषा में तुम्बा (अथवा गढ़मूता) कहा जाता है। उसका वनस्पति विज्ञान में नाम साइट्रुलस कोलोसिंथी (*Citrullus colocynthi*) है और यह कुकरबिटेसी परिवार का सदस्य है। यह भारत, उत्तरी अफ्रीका तथा मध्य पूर्व एशिया के मरुस्थलीय भागों में उत्पन्न होता है। उसका कड़वापन इतना अधिक होता है कि यदि उस फल को उंगलियों में पकड़ कर हल्का-सा दबाया भर जाए तो उंगलियां कड़वी हो जाती हैं। अधिक दबाने पर फल फट जाता है तथा अन्दर से खरबूज़े के जैसा गूदा बाहर निकलता है जो अत्यधिक कड़वा होता है।

तुम्बा अथवा गढ़मूता के फलों को रेगिस्तानी क्षेत्रों में पलने वाली बकरियां खाती हैं (संभवतः उसका कड़वापन उन बकरियों को पसंद आता है)। इसके अलावा ग्रामीण इलाकों के वैद्य लोग इसका उपयोग डायबिटीज़ तथा कुछ दूसरी बीमारियों के इलाज के लिए भी करते हैं। इस पौधे के फल पर युरोप तथा दूसरे देशों में अनुसंधान भी किए गए हैं तथा इससे चिकित्सा सम्बंधी औषधियां तथा अन्य सामग्री बनाने के प्रयास भी किए गए हैं।

वैसे तुम्बा से सम्बंधित अनेक वैज्ञानिक शोध पत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें उसके विविध उपयोगों की संभावनाएं इंगित की गई हैं। उदाहरण के लिए पशुओं के लिए आहार, बहुपयोगी दवाएं, विटामिन तथा स्वास्थ्यवर्धक के तौर पर तथा विदेशों को निर्यात की संभावनाएं दर्शाई गई हैं। किन्तु साथ ही उन पत्रों में यह भी संकेत दिए गए हैं कि इनका सीमित मात्रा से अधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए

हानिकारक भी हो सकता है।

तुम्बा विषयी मेरी एक रचना कुछ समय पूर्व एक प्रसिद्ध पत्रिका में छपी थी। तत्पश्चात मुझे बाड़मेर (राजस्थान) ज़िले के बालोतरा नगर से एक सज्जन का टेलीफोन आया। उन्होंने बताया कि बालोतरा नगर में उनकी मिठाई की दुकान है, जहां पर उनके पुरखों ने तुम्बा के कड़वे फल से अत्यंत स्वादिष्ट मिठाई बनाने की अति उत्तम तकनीक ईजाद की थी। यह मिठाई पूरे बालोतरा नगर और यहां तक कि दूर दराज़ के क्षेत्रों में अत्यंत लोकप्रिय हो चुकी है। किन्तु यह मिठाई ताज़ी ही खाई जा सकती है, क्योंकि एक-दो दिनों के अन्दर ही यह खराब होने लगती है।

फिर अचानक उस मरुस्थल में मुझे हरियाली नज़र आने लगी। जहां पर तुम्बा के जंगली पौधे उगे थे, उसी के निकट अनेक नीम, पीपल, बरगद तथा अन्य दूसरी जातियों के पौधे भूमि पर उगाए गए थे, जो यद्यपि अभी तो छोटे थे किन्तु वे तेज़ी से बढ़ रहे थे।

मालूम पड़ा कि वहां पर तेल उत्पादक कंपनी (जिसके अंतर्गत वह मरुस्थलीय क्षेत्र आता था) पर्यावरण में सुधार लाने और हरियाली बढ़ाने के उद्देश्य से ड्रिप सिंचाई प्रणाली द्वारा पौधे उगाने का काम करवा रही है और उसमें पर्याप्त सफलता भी प्राप्त होती दिखाई पड़ रही है। अनेक प्रकार के वृक्ष वहां उग रहे हैं जो संभवतः कुछ समय में ही छायादार वृक्ष बन जाएंगे।

इस प्रणाली के अंतर्गत सिंचाई के लिए जल को पतले पाइपों द्वारा बूंद-बूंद करके पौधे की जड़ में धीरे-धीरे पहुंचाया जाता है। जल की अल्प मात्रा सीधे पौधे की जड़ में पहुंच कर उसे सिंचित करती रहती है। इस प्रकार सामान्य सिंचाई के दौरान वाष्पीकरण तथा इधर-उधर फैल जाने के कारण होने वाली पानी की बरबादी रुक जाती है तथा पानी केवल उन्हीं स्थलों पर पहुंचता है जहां उसकी आवश्यकता है। ड्रिप सिंचाई द्वारा जल की अत्यंत कम मात्रा भी पौधों को समुचित नमी पहुंचा देती है तथा सूखे इलाकों के लिए यह वरदान-सा सिद्ध होती है।

इस प्रकार उस मरुस्थली क्षेत्र में जहां मुझे एक ओर रेगिस्तानी पौधों, कंटीली झाड़ियों, चटक पीले रंग के संतरे जैसे फलों का संसार दिखा वहीं दूसरी तरफ मानव प्रयासों के फलस्वरूप हरे-भरे पौधों का बढ़ता हुआ उद्यान भी दिखा। निसंदेह प्रकृति की लीला निराली है। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में....

स्रोत फरवरी 2016
अंक 325

- **कौए और उनके औज़ार**
- **सबसे खतरनाक रोगाणु**
- **दिल्ली में संकट बनी हवा**
- **जीन संपादन की नई तकनीक क्रिस्पर**